आपकी जिज्ञासा

प्रिय पाठको, प्रायः एक ही प्रकार की जिज्ञासाओं के समाधान आप पत्र एवं फोन, फैक्स, ईमेल द्वारा पूछते रहते हैं अतः कुछ प्रमुख जिज्ञासा जो सबसे अधिक आ रही है उनके समाधान नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं। यदि आपकी भी कोई जिज्ञासा हो तो आप पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखे एवं पत्र के ऊपर ''जिज्ञासा'' अवश्य लिखें। सभी समाधान स्वयं परमपूज्य गुरुदेव श्री कमल श्रीमालीजी द्वारा दिये जाते हैं।

जिज्ञासा- गुरुजी, पितर किन्हें कहा जाता हैं?

समाधान- यों तो ब्रह्माजी सबके पितामह कहलाते हैं, कश्यप आदि प्रजापति भी उनके जन्मदाता होने से पितर हैं। पर मुख्यतया पितृलोक (जो भुवलोक का प्रखर प्रकाशयुक्त 'पद्यौ' नामक अंतरिक्ष का भाग है) में रहने वाले द्विविध पितरों को ही पितर कहा जाता है। इनमें पहले पितृलोक के नियामक और अधिकारी अग्निष्वात्तादि 'दिव्य पितर' हैं, और दूसरे 'मनुष्य पितर' हैं तो मरने के बाद पितृलोक में जाते हैं और श्राद्धादि में वेद मंत्रों द्वारा जिनका आवाहन किया जाता है। वेद, वेदिक सूत्र, स्मृति, महाभारत और पुराणादि में इनका विस्तृत वर्णन है। हमारे यहां श्राद्ध-तर्पण के समय केवल अपने जन्मदाता पितरों को ही पिण्ड और तर्पणांजलि नहीं दी जाती, बल्कि सभी को दी जाती है। यहां तक कि सारे विश्व के प्राणी मात्र की तृप्ति के लिये पिण्ड और जलांजलि दी जाती है। परंतु 'पितृ' शब्द का मुख्य अर्थ है जन्म देने वाले माता-पिता आदि ही।

जिज्ञासा- गुरुजी, हिंदू शास्त्रों के सिवा अन्य मतों के ग्रंथों में श्राद्ध का उल्लेख नहीं है। वे लोग श्राद्ध करते भी नहीं, उनके पितरों का क्या होता होगा?

समाधान- ऐसी बात नहीं है कि दूसरे धर्म वाले कुछ नहीं करते। ईसाई लोग फल-फूल चढ़ाते हैं, मृतक के लिये प्रार्थना करते हैं इसी प्रकार मुसलमान भी करते हैं। पारसी भी करते हैं। परंतु मान भी लें कि वे लोग नहीं करते, तो इससे क्या हुआ। जो नहीं करते, उनके पितरों को कष्ट ही होता है, मेरा तो यही विश्वास है। रही शास्त्रों की बात-सो यह तो अनुभव की बात है। हमारे महर्षियों ने अपनी साधना से प्राप्त की हुई दिव्य दृष्टि से लोक-लोकान्तरों का ज्ञान प्राप्त किया। तपोबल से सर्वत्र विचरण की शक्ति प्राप्त की और देख-सुनकर सब यथार्थ लिख दिया। अन्य धर्म वाले ऐसा नहीं कर सके, तो इसके लिये क्या किया जाये।

जिज्ञासा- गुरुजी, श्राद्ध के अतिरिक्त पितरों के लिये और भी कुछ करना चाहिये?

समाधान- दान देना चाहिए, भगवान से प्रार्थना करनी चाहिये और उनके उद्देश्य से भगवन्नाम का २४, ४८ घंटे या इससे अधिक काल तक अखण्ड कीर्तन करना चाहिये। घर में ज्यादा आदमी न हों, अखण्ड कीर्तन की व्यवस्था न हो सके, तो प्रतिदिन नियमित समय तक अकेले ही नाम-कीर्तन करना चाहिये। इससे पितरों को बड़ा सुख मिलता है। इसके अतिरिक्त एकादशी आदि व्रतों का भागवत सप्ताह का, भांति-भांति के पुण्यों का और तीर्थ वनादि से पुण्य भी उनके अर्पण किया जाता है। भगवान् की भक्ति करने से पितरों को बहुत शांति मिलती है।

जिज्ञासा- गुरुजी, कौनसे कार्य श्राद्ध पक्ष में करने वर्जित कहलाते हैं। कृपया जिज्ञासा शांत करने की कृपा करें।

समाधान- आश्विन कृष्ण पक्ष में कन्यागत सूर्य होता है। यह नीचाभिलाषी होता है, इसलिए मांगलिक कार्य नहीं होते हैं। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार चंद्रमा के उर्ध्व भाग में पितृ रहते हैं। श्राद्ध कालावधि में यह लोक पृथ्वी के अधिक निकट होता है, इसलिए पितरों की दृष्टि पृथ्वी पर होती है। वे चंद्र की कलाओं में तिथि अनुरूप अपने-अपने वंश को देखते हैं। वेदव्यास ने श्राद्ध करने वाले को क्रोध, उतावलापन तथा प्रमाद का त्याग अनिवार्य बताया है।

जिज्ञासा- गुरुजी, नवरात्रि में पूजा-उपासना करते समय किन-किन नियमों का पालन करना जरुरी होता है?

समाधान- उपवास, ब्रह्मचर्य, कठोर बिछौने पर शयन करना, किसी से सेवा न लेना एवं दिनचर्या को पूर्णतया नियमित एवं अनुशासित रखना। अपने दैनिक कर्तव्य में संलग्न रहते हुए अधिक से अधिक अपने इष्ट-चिंतन में निमग्न रहें। ईर्ष्या-द्वेष, परिचर्चा-निंदा आदि से दूर ही रहें। सबके प्रति सद्भाव रखें। नवरात्र की साधना निश्चित रूप से साधक पर अजस्र अनुदानों को बरसाने वाली सिद्ध होगी।

जिज्ञासा- गुरुजी, क्या साधना में जो विधि-विधान दिया जाता है उसको संक्षिप्त रूप में करने से भी फल प्राप्त होगा?

समाधान- हर व्यक्ति न्यास-ध्यान मुद्रा आदि-आदि विधान नहीं कर सकता लेकिन स्तोत्र-मंत्र जाप आदि कर भी फल प्राप्त कर सकता है। साधना का फल आस्था एवं श्रद्धा होने पर अवश्य प्राप्त होता है।

जिज्ञासा- गुरुजी, महाकाली के हाथों में जो अस्त्र-शस्त्र दिखाई देते हैं वे किसका प्रतीक हैं?

समाधान- काली को प्रायः चार हाथों में दर्शाया जाता है। एक हाथ में वे तलवार धारण करती हैं, जिससे मानव की आत्मा को जकड़ने वाली माया के बंधन काटती हैं। एक हाथ में वे राक्षस का कटा सिर पकड़े है, जो प्रतीक हैं, मानव के स्वार्थपूर्ण स्वरूप से आजाद होने का। वह स्वयं की सीमित भावना से मानव को मुक्त कराने का प्रतीक हैं। दो हाथों से वे अपने भक्तों को अभय का वरदान देती हैं। काली असीमता, अपारता की द्योतक हैं उनका पूर्ण व्यक्तित्व आदर्श मां का प्रतीक हैं, जो परिपूर्ण है, विलक्षण है। काली जगत को नकारात्मक ताकतों से मुक्त कराती है।

जिज्ञासा- गुरुजी, यदि नवरात्री में कोई व्यक्ति दुर्गा सप्तशती का पूरा पाठ नहीं कर पायें तो क्या किसी संक्षिप्त विधि से भी पाठ कर सकता हैं?

समाधान- जो साधक ''दुर्गा सप्तशती'' का पूरा पाठ नहीं कर पायें या संभव नहीं हो वे व्यक्ति ''तान्त्रोक्त रात्रि सूक्तम'' पश्चात् ''शुक्रादिस्तुति'' एवं अन्त में ''तान्त्रोक्त देवी सूक्तम'' का पाठ करें। ऐसा करने पर भी उन्हें ''दुर्गा सप्तशती'' के पाठ जितना ही फल प्राप्त होगा।

जिज्ञासा- गुरुजी, क्या स्त्रियाँ भी यंत्र पूजा, मंत्र के जाप, यज्ञ, हवन आदि कर सकती हैं?

समाधान- हाँ, क्यों नहीं? जितना अधिकार पुरुषों को है उतना ही साधना का अधिकार स्त्रियों का है। लेकिन स्त्रियों को मात्र ऋतुकाल में ५ दिन पूजा-उपासना का निषेध है।

♦♦♦